

## कैलिफोर्निया के अतीत के सहारे वर्तमान जलवायवीय चुनौतियों पर प्रकाश

### प्रलिमिंस के लिये:

**वनागन्नि**, प्लेइस्टोसनि/अत्यंत नूतन युग, ला बरे टार पट्टिस, होलोसीन/अभिनव युग, **भू-वैज्ञानिक काल मापकरम**, मैमथ, वशाल भालू, भयानक भेड़िये, ऊँट

### मेन्स के लिये:

भवषिय में बड़े पैमाने पर वल्लिपत्तको रोकने की प्राथमिकता

## चर्चा में क्यों?

मानव-जननि **जलवायु परिवर्तन** और वधितनकारी भूमिप्रबंधन प्रथाओं के कारण घातक **वनागन्नि** की घटनाओं की व्यापकता बढ़ गई है। हाल ही में कथिा गया एक नवीन अध्ययन **प्लेइस्टोसनि युग** के दौरान कैलिफोर्निया के इतिहास पर प्रकाश डालता है, पृथ्वी **60 मिलियन से अधिक वर्षों** में वर्तमान में सबसे बड़ी वल्लिपत्तकी आपदा के साथ-साथ गंभीर **जलवायु परिवर्तन** का भी सामना कर रही है।

## प्लेइस्टोसनि युग:

- यह भू-वैज्ञानिक युग है जिसकी कालावधि लगभग **2,580,000 से 11,700 वर्ष** पूर्व तक है, इसमें पृथ्वी पर **हमिनदीकरण की सबसे हालिया** अवधि शामिल है।
  - प्लेइस्टोसनि युग के दौरान वैश्विक शीतलन या हमियुग की सबसे हालिया घटनाएँ घटित हुईं।
- इस युग में हमियुग के वशाल जीव शामिल थे, जैसे- **वूली मैमथ** (मैमथस प्रमिजिनयिस), **वशाल भालू**, **भयानक भेड़िये और ऊँट**, इनमें से कई प्लेइस्टोसनि युग के अंत में वल्लिपत्त हो गए।
  - इसके परिणामस्वरूप काफी नुकसान हुआ, उत्तरी अमेरिका में 97 पाउंड से अधिक वजन वाले **70% से अधिक**, दक्षिण अमेरिका में **80% से अधिक और ऑस्ट्रेलिया में लगभग 90%** स्तनधारी वल्लिपत्त हो गए।
- प्लेइस्टोसनि युग का अंत **होलोसीन युग की शुरुआत का भी प्रतीक है, यह वर्तमान युग है जिसमें हम रह रहे हैं।**

## अध्ययन की प्रमुख वशिषताएँ:

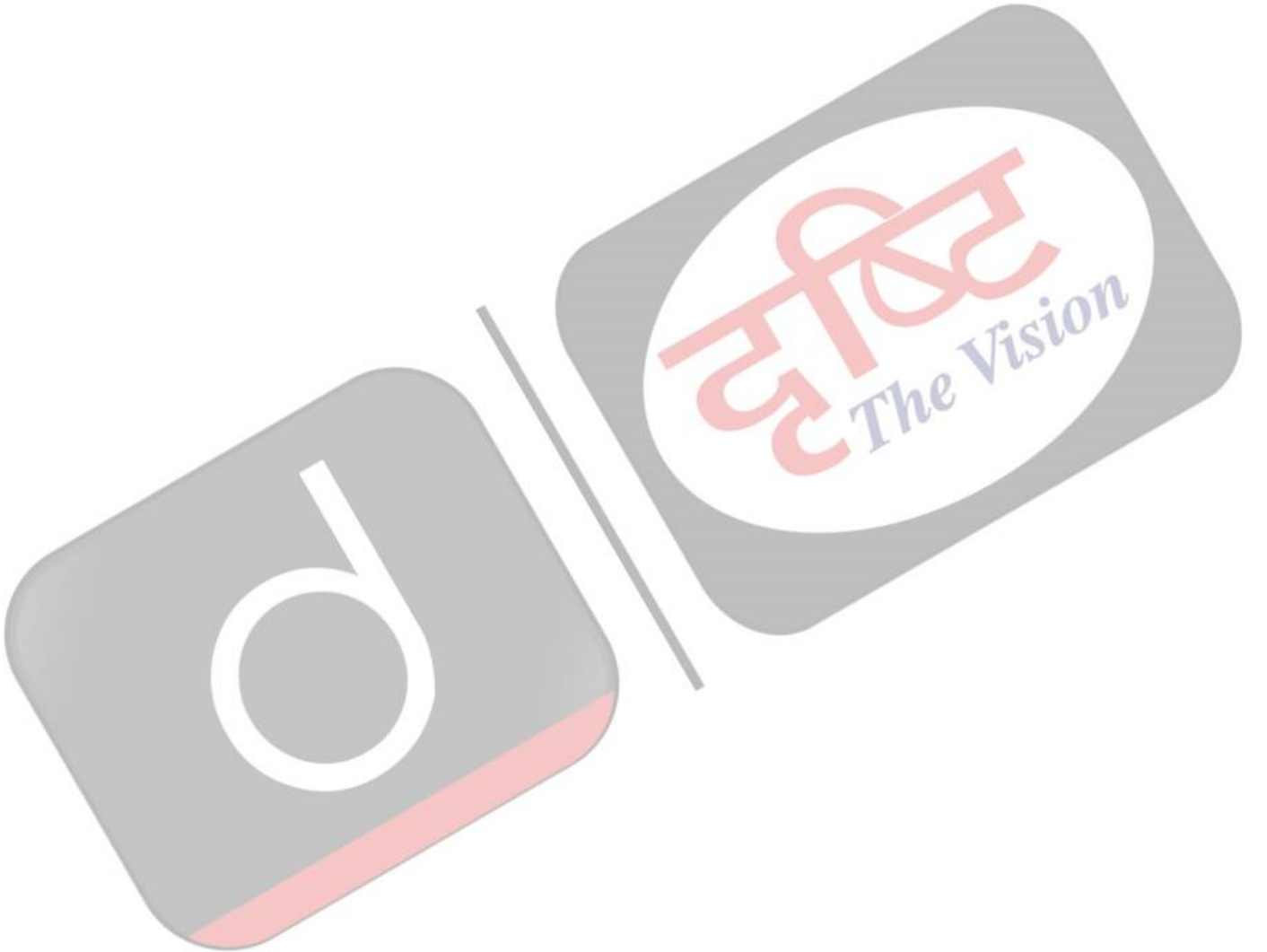
- **ला बरे टार पट्टिस से प्राप्त जानकारी:** ला बरे टार पट्टिस लॉस एंजलिंस, अमेरिका में एक वपुल हमियुग जीवाश्म स्थल है जहाँ डामर के रसिाव में फँसे हज़ारों बड़े स्तनधारियों के संरक्षित अवशेष हैं।
  - जीवाश्मों से प्राप्त प्रोटीन के अध्ययन से **लंबे समय तक सूखे और तीव्र मानव जनसंख्या वृद्धि** के कारण गर्म जलवायु के एक घातक संयोजन का पता चलता है।
    - इन कारकों ने दक्षिणी कैलिफोर्निया के पारस्थितिकी तंत्र को चरम बट्टि पर धकेल दिया, जिससे वनस्पति और मेगा-स्तनपायी आबादी में काफी परिवर्तन हुए।
    - पछिले हमियुग के बाद जैसे-जैसे कैलिफोर्निया गर्म होता गया, परदिश्य शुष्क होता गया और जंगल कम होते गए।
      - ला बरे में **संभवतः मानव शिकार और नविस सथान के नुकसान के संयोजन से शाकाहारी आबादी में भी गरिावट आई।** पेड़ों से जुड़ी प्रजातियाँ, जैसे ऊँट, पूरी तरह से लुप्त हो गईं।
- **एक नया प्रतमान- आग की भूमिका:** यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि **आग दक्षिणी कैलिफोर्निया में अपेक्षाकृत हाल की घटना है, आग लगने की घटना अक्सर मानव आगमन के बाद ही होती है।**
  - **तटीय कैलिफोर्निया में 90% से अधिक आग की घटनाओं का कारण मानवीय गतिविधियाँ जैसे- बजिली लाइन का गरिना और कैम्प फायर है।**
  - प्लेइस्टोसनि में वल्लिपत्तियों और समकालीन संकटों के बीच समानता जैसे मशरिति तनाव पारस्थितिकी तंत्र की भेद्यता को

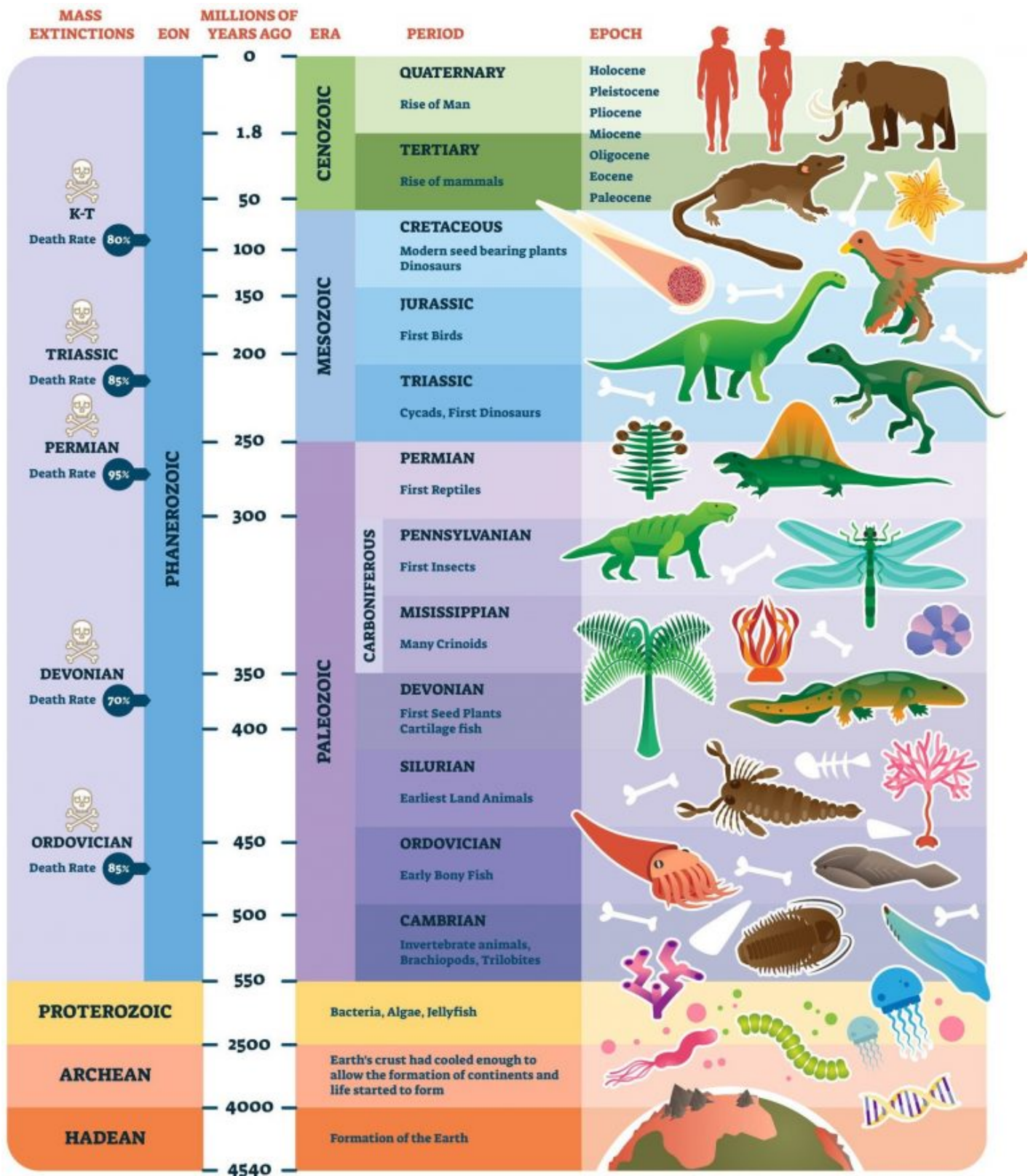
रेखांकित करते हैं।

- जलवायु और जैवविविधता संकट की प्रासंगिकता: वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, मानव जनसंख्या का वसितार, जैवविविधता हानि तथा मानव-जनति आग की घटनाएँ अतीत को प्रतबिबिति करती हैं।
  - वर्तमान में तापमान वृद्धि की दर, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने से प्रेरित, **हमियुग के अंत से कहीं अधिक** है।
  - अध्ययन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, आग की घटनाओं को रोकने और मेगाफौना की सुरक्षा के प्रयासों को तेज़ करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है।

## भू-वैज्ञानिक काल मापक्रम:

- **भू-वैज्ञानिक काल मापक्रम** एक विशाल समयरेखा की तरह है जो हमें अपने ग्रह के इतिहास को समझने में मदद करता है।
  - जसि प्रकार एक कैलेंडर वर्षों, महीनों और दिनों को विभाजित करता है, उसी प्रकार भू-वैज्ञानिक काल मापक्रम पृथ्वी के इतिहास को **ईयान (Eon)**, **महाकल्प (Era)**, **कल्प (Period)**, **युग (Epoch)** और **आयु (Age)** समय कर्मों में विभाजित करता है।
- ईयान को महाकल्पों में, महाकल्पों को कल्पों में, कल्पों को युगों में और युगों को आयु में विभाजित किया गया है।





## भवष्य में व्यापक वलुप्तकरण को रोकने के लिये हमारी प्राथमकितार्ः

- समग्र पारस्थितिकी तंत्र की बहाली और संरक्षण:
  - अभनिव पारस्थितिकी तंत्र मानचित्रण: पारस्थितिकी तंत्र की अवस्था का आकलन करने और बहाली के लिये महत्त्वपूर्ण क्षेत्नों की पहचान करने हेतु उन्नत मानचित्रण प्रौद्योगिकियों का विकास करना ।
  - जैव-गलयारा नरिमाण: खंडित आवासों को जोड़ने के लिये पारस्थितिकी गलयारे स्थापति करना, ताका प्रजातियों को वविधि वातावरणों में स्थानांतरति और वकिसति होने में सकषम बनाया जा सके ।
  - नवारक संरक्षण: दीर्घकालिक पारस्थितिकी तंत्र लचीलेपन के लिये महत्त्वपूर्ण पारस्थितिकी संतुलन बनाए रखने हेतु प्रमुख प्रजातियों के संरक्षण को प्राथमकिता देना ।
- प्रजातियों के लचीलेपन के लिये संश्लेषति जीववजिज्ञान का उपयोग:
  - आनुवंशिकी वृद्धि: सुभेद्य प्रजातियों के भीतर आनुवंशिकी वविधिता को बढ़ाने, बदलती परस्थितियों के प्रति उनकी अनुकूलन क्षमता में वृद्धि हेतु संश्लेषति जीववजिज्ञान तकनीकों का प्रयोग करना ।
  - विकास हेतु समर्थन: प्रजातियों के अनुकूलन के लिये नरिंतरति हस्तक्षेपों के माध्यम से पर्यावरणीय बदलावों के प्रति प्रतिक्रिया को तेज करना ।
  - नैतिकी वमिर्श: संरक्षण प्रयासों में संश्लेषति जीववजिज्ञान के उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग के लिये एक वैश्विक नीति ढाँचा तैयार करना ।
- संसाधनों के सतत् उपयोग के लिये हरति नवाचार:
  - चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा: संसाधनों की कमी और बर्बादी को कम करने के लिये चक्रीय अर्थव्यवस्थाओं (Circular Economies) को बढ़ावा देना, ताका पारस्थितिकी तंत्र पर दबाव को कम कथिा जा सके ।
  - बायोमिमिक्री और सस्टेनेबल डिजाइन: उद्योगों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने के लिये पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद वकिसति करना ।
  - हरति अवसंरचना: टकिारु बुनयिादी ढाँचे में नविश करना, जो वन्यजीवों के आवास (Habitat Destruction) को कम क्षति पहुँचाता हो, जैसे वन्यजीव-अनुकूल सड़क मार्ग के नरिमाण के माध्यम से धारणीय विकास को बढ़ावा देना ।
- डेटा-संचालति संरक्षण प्रबंधन:
  - पूर्वानुमानति वश्लेषण: पारस्थितिकी तंत्र की गतशीलता को बनाए रखने के लिये मशीन लर्निग और कृत्रमि बुद्धिमत्ता का उपयोग करना, ताका वियवधानों को रोकने के लिये समय पर हस्तक्षेप कथिा जा सके ।
  - वास्तविकी समय नगरिानी: पारस्थितिकी तंत्र की वास्तविकी समय नगरिानी और दबावकारी कारकों का शीघ्र पता लगाने के लिये रमिोट सेंसर तथा उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग करना ।
    - सीमाओं के पार सहयोगात्मक संरक्षण प्रयासों को सुवधाजनक बनाने के लिये इंटरकनेक्टेड डेटा-शेयरिग नेटवर्क स्थापति कथिे जाने की आवश्यकता है ।
- युवाओं और समुदायों का सकषतीकरण:
  - पर्यावरण शकिसा में सुधार: जैववविधिता के महत्त्व की गहरी समझ को बढ़ावा देने तथा कम आयु से ही नेतृत्व की भावना जागृत करने के लिये शैकषिकी पाठ्यक्रम में सुधार करना ।
  - युवा-प्रेरति पहल: नीतियों के नरिमाण में उनके प्रभाव तथा भागीदारी को बढ़ाने के लिये युवाओं के नेतृत्व वाली संरक्षण परयिोजनाओं और प्लेटफॉर्मों को प्रोत्साहति करना ।
  - सांस्कृतिकी एकीकरण: सामुदायिकी स्वामति और टकिारु प्रथाओं को बढ़ावा देते हुए स्वदेशी एवं स्थानीय ज्ञान प्रणालियों की संरक्षण रणनीतियों में एकीकृत करना ।

स्रोत: [डाउन टू अर्थ](#)